बन ककड़ी की खेती

सामान्य नाम	:	बनककड़ी
वानस्पतिक नाम	:	*पोडोफिल्लम हैक्जेंड्रम*
कुल	:	पोडोफिलयेसी
उपयोगी भाग	:	प्रकन्द (रूट स्टॉक)
सामान्य उपयोग	:	प्रकन्द का प्रयोग टाइफायड के बुखार, पीलिया, पेचिस, क्रोनिक हैपाटाईस, गठिया, त्वचा रोग, गुर्दे और मूत्राषय की समस्याओं की रोकथाम के लिए किया जाता है। इसकी जड़ के लेप को अल्सर, कटे और घावों पर लगाया जाता है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

कमरा न. 309, तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष: 011-24651825 | **फैक्स** : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | **वैबसाईट** : www.nmpb.nic.in

नोटः– कृषि प्रौद्योगिकी का विकास एस.के. यूनिवर्सिटी ऑफ ऐग्रीकलचरल सांइस एण्ड टेक्नोलॉजी, श्रीनगर, जम्मू तथा कश्मीर के द्वारा किया गया है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड
आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

बनककड़ी

पोडोफिल्लम हैक्जेंड्रम
पोडोफिलयेसी

- बनककड़ी रसदार, सीधा लगभग 30 सेंटीमीटर ऊंचा बारहमासी पौधा है, इसकी प्रकन्द लम्बी गाँठदार होती है।
- इसका तना पत्ती वाला, संख्या में एक या दो बिना शीर्ष का होता हैं।

जलवायु और मिट्टी

- यह पौधा जंगल में 2000 –3500 मीटर (समुद्र तल से) की ऊँचाई में पाया जाता है और खेतों में झाड़–झाखाड़ के रूप में अच्छी तरह सिंचाई के लिए भली भॉति नाली से जुड़ी हुई हल्की गाद वाली खार–मिट्टी से समृद्ध भूमि में अच्छी तरह फलता फुलता है।

रोपण सामग्री

- बीजों एवं रुटस्टॉकस

नर्सरी तकनीक

पौध तैयार करना:

- पौध को बीजों द्वारा या रुटस्टॉक से तैयार किया जाता है।
- बंसत ऋतु में आने से पहले यानि सर्दी के आरम्भ में ही बीज बोये जाते हैं।

पौध दर और पूर्व उपचार

- एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिए 7.0 –8.0 किलो बीजों की आवश्यकता पड़ती हैं।
- बीज को पहले कोई पूर्वभिक्रिया की आवश्यकता नहीं होती हैं और प्रथम दो वर्षों में प्रति वर्गमीटर 9 पौधों का फसल होता है।

खेत में रोपण

भूमि की तैयारी एवं उर्वरक प्रयोग:

- भूमि को जोतकर समतल करना चाहिए।
- मिट्टी के साथ उर्वरक (एफवाईएम) 10 टन/हेक्टेयर के हिसाब से मिलाया जाता है।

प्रत्यारोपण और अधिकतम दूरी

- पौध को 10–12 सेमी. की गहराई तक 30 सेमी से 30 सेमी की दूरी छोड़ते हुए प्रत्यारोपित किया जाता है। इसकी स्थापना में 15 दिन लग जाते हैं।

संवर्धन विधियाँ और रख–रखाव पद्धतियाः

- प्रत्येक 4 हफ्ते के अंतराल में नियमित रुप से निराई और गुड़ाई की जाती है।
- इसको जून–अगस्त के गर्मी के मौसम के दौरान हल्की सिंचाई की आवश्यकता होती है।
- मार्च –मई माह के दौरान नियमित रुप से निराई और गुड़ाई की जरुरत पड़ती है।

फसल प्रबंधन

फसल पकना और कटाईः

- प्रथम वर्ष में पौधा अपनी वेजिटेटीव अवस्था में रहता है और दो और तीन वर्ष पश्चात् ही फूल आते है।
- अधिक रेंजिग कन्टेन्ट के कारण रुटस्टॉकस को बंसत ऋतु में जमीन से खोद कर निकाला जाता है।

कटाई पश्चात प्रबंधनः

- ऊपरी हिस्सों के सूखने के बाद जड़ और प्रकन्द को खोद कर बाहर निकाला जाता है।
- जड़ और प्रकन्द को 15–20 सेंटी मीटर लम्बे टुकड़ो में काट कर छाया दार स्थान पर सुखाया जाता है।
- सूखे हुए टुकड़ों को साफ कन्टेनरों अथवा गनी थैलो में रखा जाता है।

पैदावारः

- प्रति हेक्टेयर 3.0 से 4.0 टन सूखी जड़ें प्राप्त होती हैं और एक हेक्टयर से लगभग 10 किलो बीज 5 वर्षों में प्राप्त होते हैं।